परास्नातक स्तर के लघु शोध-प्रबंधों में ग्रंथ सूची की गुणवत्ता

कीर्ति सिंह*
शैलेन्द्र कुमार**
अजीत कुमार राय***

किसी भी राष्ट्र की उन्नति व प्रगति में वैज्ञानिक अनुसंधान अथवा शोध का योगदान सर्वाधिक होता है, क्योंकि इन्हीं शोधों के द्वारा नवीन ज्ञान की खोज तथा समाज व राष्ट्र की मूल समस्याओं का समाधान किया जाता है। वर्तमान में भारत में विभिन्न क्षेत्रों, जैसे — विज्ञान, अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में शोध किए जा रहे हैं। शोध कार्यों का सत्यापन, शोध के विभिन्न आयामों का विश्लेषण के माध्यम से किया जाता है। इसी प्रकार ग्रंथ सूची भी शोध का एक महत्वपूर्ण आयाम है जिससे शोध की गुणवत्ता को परखा जाता है। शोध की विश्वसनीयता तथा वैधता का सत्यापन भी ग्रंथ सूची द्वारा ही किया जाता है। इस शोध पत्र में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के महिला महाविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग में किए गए शोध द्वारा परास्तनातक स्तर पर लघु शोध प्रबंधों में ग्रंथ सूची की गुणवत्ता को परखने के प्रयास के बारे में बताया गया है। इसमें गुणवत्ता से तात्पर्य संदर्भ और ग्रंथ सूची की समानता तथा शुद्धता से है। इस शोध के परिणाम, ग्रंथ सूची लेखन में होने वाली विभिन्न प्रकार की त्रुटियों को चिह्नित करते हैं व मुख्य विषय-वस्तु में संदर्भित संदर्भों की ग्रंथ सूची में अनुपस्थिति को भी प्रदर्शित करते हैं।

वैज्ञानिक शोध करने का एक क्रमबद्ध नियम होता है, जिसमें शोध एक विशेष क्रम व कुछ निश्चित चरणों में संचालित होता है। सर्वप्रथम शोध की समस्या का चयन कर समस्या को परिभाषित किया जाता है। दूसरे चरण में, चरों का वर्गीकरण कर परिभाषित किया जाता है। समस्या का वैज्ञानिक विधि से समाधान करने के लिए उद्देश्यों या शोध प्रश्नों का निर्माण किया जाता है। तत्पश्चात् उचित शोध विधि का चयन किया जाता है। उचित सांख्यिकी प्रविधि द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण किया जाता है, तत्पश्चात् परिणाम की प्राप्ति होती है। अंत में प्राप्त परिणाम का सामान्यीकरण किया जाता है (बेस्ट, 2002)। शोध कार्य करते समय शोधार्थी विभिन्न संबंधित साहित्यों एवं शोध ग्रंथों का अध्ययन करता है। शोध कार्य पूर्ण होने पर वह शोध को लिपिबद्ध करता है। शोध को लिपिबद्ध करने में शोधार्थी विभिन्न पदों को लिखता है। इन पदों में एक सबसे महत्वपूर्ण पद ग्रंथ सूची होता है। ग्रंथ सूची किसी भी शोध प्रबंध

* *शोधार्थी*, शिक्षाशास्त्र विभाग, महिला महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 221005
** *शोधार्थी*, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 221005
***अ*सिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 221005

© NCERT not to be republished

का महत्वपूर्ण अंग होता है जिसके बिना शोध प्रबंध का कार्य अधूरा माना जाता है तथा ग्रंथ सूची में दिए गए संदर्भों के आधार पर शोधक द्वारा शोध के दौरान एकत्रित सूचना तथा तथ्यों का सत्यापन होता है। ग्रंथ सूची में शोध प्रबंध में सम्मिलित किए गए लेखकों व शोधकों के नामों तथा उनके शोध/लेख और पुस्तक के प्रकाशन से संबंधित संपूर्ण विवरण दिया जाता है। ग्रंथ सूची शोध प्रबंध के अंत में लिखी जाती है। संदर्भ ग्रंथ सूची में शोधक उन सभी अध्ययनों या लेखकों को आरोही क्रम में लिखता है जो उसके शोध अध्ययन में शामिल किए गए हैं (सिंह, 2015)।

शोध अध्ययन के दौरान उपयोग किए गए तथ्यों के संदर्भों के अतिरिक्त शोध अध्ययन की तैयारी करने के लिए केवल पृष्ठभूमि के रूप में पढ़ी गई पुस्तकों व शोध प्रबंधों आदि को भी ग्रंथ सूची में सम्मिलित किया जाता जा सकता है। ग्रंथ सूची आमतौर पर तीन प्रकार में संरचित की जाती है — विज्ञान संबंधी लेखों एवं शोध पत्रों के लिए ए.पी.ए. (अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन) मानविकी लेखों एवं शोध पत्रों के लिए एम.एल.ए. (मॉडर्न लैंग्वेज एसोसिएशन) तथा पुस्तकों और पत्रिकाओं के लिए सी.एम.एस. (शिकागो मैनुअल ऑफ़ स्टाइल) का प्रयोग करते हैं (गोरमैन, 2016)। इस शोध पत्र में 'संदर्भ ग्रंथ सूची' से तात्पर्य शोध प्रबंध की विषय-वस्तु में संदर्भित संदर्भों की सूची से है, जिसमें विभिन्न लेखकों एवं शोधकों के शोध पत्र, लेख, पुस्तक शोध प्रबंध आदि से संबंधित संपूर्ण विवरण दिया गया है।

ग्रंथ सूची का इतिहास

प्रारंभिक काल में शिक्षा मौखिक हुआ करती थी तथा कालांतर में शिक्षा में लेखन शैली का प्रयोग किया जाने लगा। जब लेखकों द्वारा पुस्तक, लेख आदि लिखना प्रारंभ किया गया, तब किसी विषय-वस्तु को किसी अन्य पुस्तक या लेख से उद्धृत करने पर उसी पृष्ठ (जिस पर विषय-वस्तु लिखी गई थी) नीचे दाहिने तरफ़ लेखक का नाम भी लिख देते थे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ग्रंथ सूची का प्रयोग तभी से होने लगा, लेकिन तब लोग 'ग्रंथ सूची' नाम से परिचित नहीं थे। उसके बाद लेखकों ने अपनी पुस्तक में अपने नाम के साथ उन सभी लेखकों का नाम लिखना प्रारंभ कर दिया जिनकी सहायता लेकर वह अपनी पुस्तक को पूर्ण करते थे। कुछ समय बाद पुस्तक के सबसे अंतिम पृष्ठ पर ग्रंथ सूची लिखना आवश्यक हो गया तथा आज सभी पुस्तकों के अंत में या पुस्तक में दिए गए अध्यायों के अंत में ग्रंथ सूची लिखा जाता है (सिह्ल, 2016)। प्रारंभिक काल में ग्रंथ सूची का कोई प्रारूप नहीं हुआ करता था। परंतु धीरे-धीरे ग्रंथ सूची लिखने का तरीका बदलता गया। तत्पश्चात् लेखक अपने नाम के साथ पुस्तक के शीर्षक का नाम, प्रकाशन स्थान तथा प्रकाशक का नाम एवं पुस्तक प्रकाशन का वर्ष लिखने लगे। आज ग्रंथ सूची को दो भागों में बाँटकर देखा जाता है, पहला 'संदर्भ' दूसरा 'ग्रंथ सूची' (सिंह, 2011)।

प्रथम भाग के अंतर्गत शोध प्रबंध में सम्मिलित किए गए महापुरुषों तथा शिक्षाशास्त्रियों, शोधकों या लेखकों के नाम, प्रकाशन वर्ष तथा शोध प्रबंध में प्रकाशित कथनों तथा अवतरण चिह्न से संबंधित संपूर्ण विवरण होता है। दूसरा भाग ग्रंथ सूची संदर्भों की सूची है जो एक शोध प्रबंध के अंत में आती है। इसमें उन सभी पुस्तकों, शोध प्रबंधों, ग्रंथों, लेखों आदि को निहित किया जाता है, जिन्हें शोध अध्ययन हेतु पढ़कर शोध से संबंधित जानकारी ली गई है। वर्तमान

समय में शोधक पुस्तकों के साथ शोध प्रबंध, शोध पत्र, लेख, वेबसाइट, विश्वकोश, पत्र-पत्रिकाओं आदि को संदर्भ शोध ग्रंथ सूची में देते हैं।

यहाँ पर ए.पी.ए. प्रारूप में विभिन्न प्रकार के ग्रंथों को संदर्भ के रूप में लिखने का नियम प्रस्तुत किया गया है (बेस्ट, 2002)। जो इस प्रकार है —

ग्रंथ का प्रकार	नियम	उदाहरण
पुस्तक	• सर्वप्रथम लेखक का अंतिम नाम लिखते हैं। • पुस्तक प्रकाशन या उसके नए संस्करण का वर्ष छोटे कोष्ठक ( ) में लिखते हैं। • तत्पश्चात् पुस्तक के शीर्षक का नाम तिरछा (इटेलिक) लिखते हैं। • अंत में पुस्तक के प्रकाशक का नाम तथा प्रकाशन के स्थान से समाप्त करते हैं।	श्रीवास्तव, री. (2010). *विज्ञान शिक्षण*. आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद.
पत्रिका	• सर्वप्रथम लेखक का अंतिम नाम लिखते हैं। • पत्रिका के प्रकाशन का वर्ष छोटे कोष्ठक ( ) में लिखते हैं। • इसके बाद शोध पत्र के शीर्षक का नाम लिखते हैं। • तत्पश्चात् पत्रिका का नाम तिरछा (इटेलिक) लिखते हैं। • पत्रिका का अंक तथा पृष्ठ संख्या से समाप्त करते हैं।	राय, अ. और अ. सिंह. (2017) मुस्लिम विद्यार्थियों के परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी अपव्यय की समस्या – एक साहित्यिक सर्वेक्षण. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. अंक-2 पृ. सं. 87–96. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली
लघु शोध प्रबंध/ शोध प्रबंध	• सर्वप्रथम शोधक का अंतिम नाम लिखते हैं। • लघु शोध प्रबंध/शोध प्रबंध की प्रस्तुति का वर्ष छोटे कोष्ठक ( ) में लिखते हैं। • तत्पश्चात् लघु शोध प्रबंध/शोध प्रबंध का शीर्षक तिरछा (इटेलिक) लिखते हैं। • इसके बाद 'अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध/शोध प्रबंध' लिखते हैं। • अंत में विश्वविद्यालय का नाम व स्थान लिखते हैं।	प्रसाद, रा. (2011). वाराणसी *महानगर के यू. पी. बोर्ड के माध्यमिक विद्यालयों की गुणवत्ता का अध्ययन*. अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी
इंटरनेट स्रोत	• सर्वप्रथम लेखक का उपनाम लिखते हैं। • तत्पश्चात् लेखक का मुख्य नाम लिखते हैं। • वेबसाइट पर लिखे प्रकरण का वर्ष छोटे कोष्ठक ( ) में लिखते हैं। • तत्पश्चात् प्रकरण को तिरछा (इटेलिक) लिखते हैं। • इसके बाद 'पुनः प्राप्त किया गया' तथा दिनांक लिखते हैं। • अंत में वेबसाइट का संपूर्ण पता लिखते हैं	शटलवर्थ, मार्टिन. (2009). *राइटिंग ए बिब्लीयोग्राफ़ी*. 19 जुलाई 2019 को https://explorable.com/writing-a-bibliography से लिया गया है.

ग्रंथ सूची लेखन अपने आप में एक कौशल है एवं शोध कार्य की गुणवत्ता को प्रतिबिंबित करता है। शिक्षा संकायों में अन्य विषय क्षेत्रों की भाँति ही परास्नातक स्तर पर लघु शोध के माध्यम से शोध प्रक्रिया एवं उससे संबंधित विभिन्न कौशलों से विद्यार्थी अवगत होते हैं। एक तरफ़ जहाँ ग्रंथ सूची लेखन कौशल का विकास विद्यार्थियों में प्रारंभिक स्तर पर ही हो जाना महत्वपूर्ण है, वहीं दूसरी ओर

© NCERT not to be republished

संबंधित साहित्य सर्वेक्षण में इससे संबंधित कोई कार्य नहीं मिला। यद्यपि शोधार्थी को 'गुणवत्ता' से संबंधित कई अध्ययन प्राप्त हुए हैं (कुमार, 1988; वाट्स, 2001; सिंह, 2006; राम शंकर, 2012)। अतः संबंधित साहित्य सर्वेक्षण प्रस्तुत शोध अध्ययन के औचित्य को स्थापित करता है। वर्तमान समय में इस प्रकार के शोध कार्य की आवश्यकता है, क्योंकि इस शोध परिणाम के आधार पर विद्यार्थियों को कौशल संबंधित जानकारी प्रदान की जा सकती है। उपर्युक्त शोध कार्य के अभाव में एवं संदर्भ ग्रंथ लेखन कौशल के महत्व को देखते हुए शोधार्थी ने निम्न शोध प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने हेतु यह शोध कार्य पूरा किया है—

- क्या परास्नातक लघु शोधों के संदर्भ ग्रंथ सूची में लिखित संदर्भों की लेखन शैली में शुद्धता है?
- क्या लघु शोधों के संदर्भ ग्रंथ सूची में लिखित संदर्भों का लघु शोध की विषय-वस्तु से संबद्धता है?

शोध विधि

इस शोध अध्ययन में प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने हेतु विषय-वस्तु विश्लेषण का प्रयोग किया गया था। इस विधि में संकलित दस्तावेज़ों (डॉक्यूमेंट्स) का विश्लेषण किया जाता है और निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश की जाती है (सिंह, 2015)। यह अध्ययन एक जनसंख्यात्मक अध्ययन (पॉप्युलेशनल स्टडी) था एवं इसलिए इस शोध में महिला महाविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के पुस्तकालय में उपस्थित परास्तनातक स्तर के 2013–14 से 2016–2017 सत्र तक नामांकित छात्राओं के लघु शोधों (73) को जनसंख्या के रूप में परिभाषित किया गया है।

अध्ययन हेतु उपकरण के रूप में स्व-निर्मित चेकलिस्ट का प्रयोग किया गया है, जो चार भागों में विभक्त है। चेकलिस्ट में प्रथम तीन भाग संदर्भ ग्रंथों से संबंधित हैं— पहला भाग पुस्तक से संबंधित है, दूसरा भाग जर्नल से एवं तीसरा भाग इंटरनेट स्रोत से संबंधित है। इन भागों में सात पदों को सम्मिलित किया गया है जिनका निर्माण संबंधित संदर्भ ग्रंथ लेखन नियमों के आधार पर किया गया है। चेकलिस्ट का चौथा भाग मुख्य विषय-वस्तु में संदर्भित संदर्भों का ग्रंथ सूची में अनुपस्थिति की आवृत्ति को जानने के लिए है।

प्रदत्त संकलन हेतु सर्वप्रथम महिला महाविद्यालय के पुस्तकालय में उपस्थित लघु शोधों की एक सूची तैयार की गई। इसके उपरांत प्रत्येक लघु शोध के संदर्भ ग्रंथ सूची का अध्ययन स्वयं शोधक द्वारा किया गया एवं अध्ययन करते हुए चेकलिस्ट को भरा गया है। चेकलिस्ट के द्वारा संपूर्ण आँकड़ों का संकलन करने के पश्चात् प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधियों (बहुलांक, प्रतिशत, आवृत्ति) द्वारा किया गया।

परिणाम

1. **पुस्तक संदर्भ लेखन पर चेकलिस्ट द्वारा प्राप्त परिणाम**—ग्राफ़ 1 में किताब की ग्रंथ सूची को 2013–2015, 2014–2016, 2015–2017 के कुल प्राप्त सही संदर्भ तथा कुल प्राप्त त्रुटिपूर्ण संदर्भ के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। ग्राफ़ में सुरमई रंग द्वारा सही संदर्भ तथा काले रंग द्वारा त्रुटिपूर्ण संदर्भ को दर्शाया गया है। चार्ट को देखने से यह विदित होता है कि संदर्भों के लेखक के नाम में तथा वर्ष में सबसे कम त्रुटि, किताब का नाम

© NCERT not to be republished

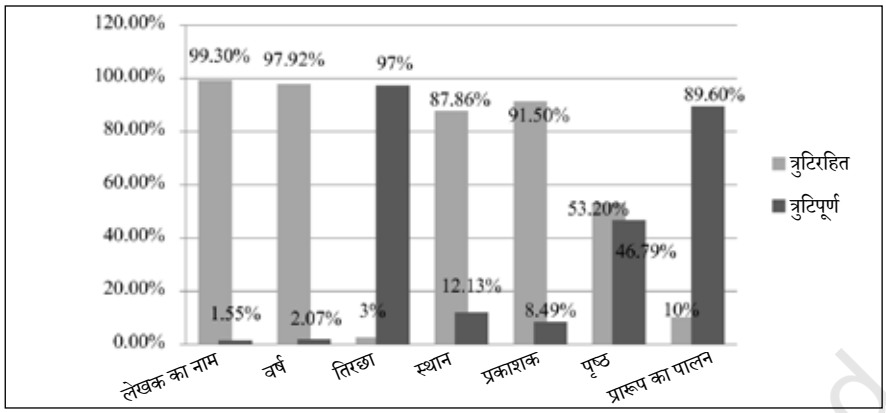

ग्राफ़ 1

तिरछे (इटेलिक) में 97.40 प्रतिशत त्रुटियाँ अर्थात् सबसे अधिक त्रुटियाँ प्राप्त हुई हैं। यदि संपूर्ण ए.पी.ए. प्रारूप को देखा जाए तो प्रारूप में 89.60 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुईं जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि किताब की ग्रंथ सूची में तीनों वर्षों में त्रुटियाँ प्राप्त हुई हैं तथा शुद्धता की कमी पाई गई है।

2. **जर्नल संदर्भ लेखन पर चेकलिस्ट द्वारा प्राप्त परिणाम**—ग्राफ़ 2 में जर्नल से प्राप्त संदर्भ ग्रंथ सूची 2013–2015, 2014–2016 तथा 2015–2016 के कुल प्राप्त सही संदर्भ तथा कुल प्राप्त त्रुटिपूर्ण संदर्भ के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। ग्राफ़ द्वारा स्पष्ट होता है कि जर्नल के लेखक के नाम, वर्ष तथा जर्नल के नाम में त्रुटियाँ कम मात्रा में हैं तथा जर्नल का नाम तिरछे (इटेलिक) में 29.83 प्रतिशत, पृष्ठ संख्या में प्राप्त त्रुटि 32.06 प्रतिशत है। परंतु यदि ए.पी.ए. प्रारूप को देखा जाए तो उसमें 69.56 प्रतिशत त्रुटियाँ अर्थात् सबसे अधिक त्रुटियाँ प्राप्त हुई हैं। चूँकि ए.पी.ए. प्रारूप तभी सही माना जाता है जब वह व्यवस्थित क्रम तथा ए.पी.ए. प्रारूप के नियमानुसार लिखा गया हो। इसलिए यह कहना यहाँ गलत नहीं होगा कि जर्नल की ग्रंथ सूची में भी शुद्धता की कमी है।

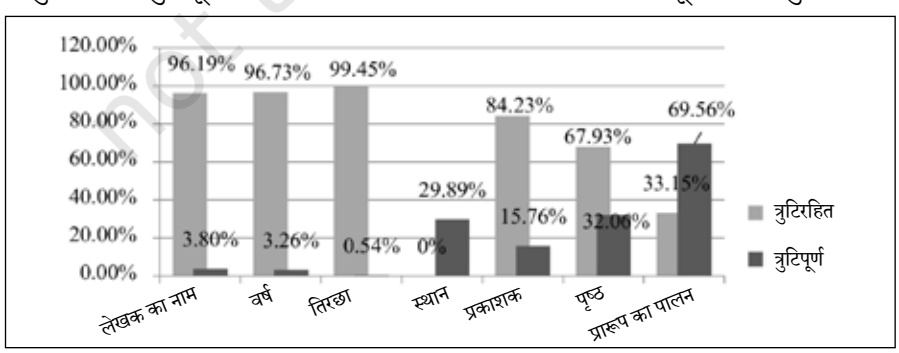

ग्राफ़ 2

© NCERT not to be republished

3. लघु शोधों में प्राप्त इंटरनेट के कुल सही संदर्भ तथा कुल त्रुटिपूर्ण संदर्भ — ग्राफ़ 3 में इंटरनेट के संदर्भ ग्रंथ सूची को 2013–2015, 2014–2016 तथा 2015–2017 के कुल प्राप्त सही संदर्भ तथा कुल प्राप्त त्रुटिपूर्ण संदर्भ के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। इंटरनेट के संदर्भ में लेखक का नाम, वर्ष, विषय का नाम तिरछे (इटेलिक) में, समय तथा दिनांक सभी में त्रुटि को ग्राफ़ द्वारा स्पष्ट किया गया है। परंतु वेबसाइट के नाम में सबसे कम त्रुटि पाई गई है। यदि संपूर्ण ए.पी.ए. प्रारूप को देखा जाए तो उसमें 95.57 प्रतिशत त्रुटियाँ अर्थात् सबसे अधिक त्रुटियाँ प्राप्त हुई हैं, जिससे इंटरनेट के प्राप्त स्रोतों के संदर्भ लेखन में अशुद्धता की व्याख्या होती है।

4. मुख्य विषय-वस्तु में संदर्भित संदर्भों की ग्रंथ सूची में अनुपस्थिति — ग्राफ़ 4 द्वारा मुख्य विषय-वस्तु में संदर्भित संदर्भों का ग्रंथ सूची में अनुपस्थिति को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है, जिसका परिणाम कुछ इस प्रकार है — 2013–2015 में 15.56 प्रतिशत, 2014–2016 में 5.21 प्रतिशत तथा 2015–2017 में 58.47 प्रतिशत त्रुटि को दर्शाया गया है। स्पष्ट है कि 2015–2017 के मध्य पूर्ण किए गए लघु शोधों की विषय-वस्तु में संदर्भित संदर्भों की ग्रंथ सूची में अनुपस्थिति सर्वाधिक है। अतः कहा जा सकता है कि मुख्य विषय-वस्तु में संदर्भित संदर्भों की ग्रंथ सूची में अनुपस्थिति भी पाई गई है।

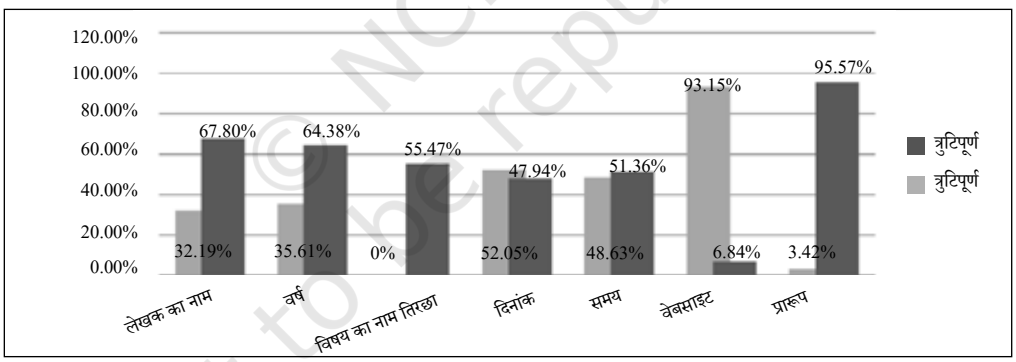

ग्राफ़ 3

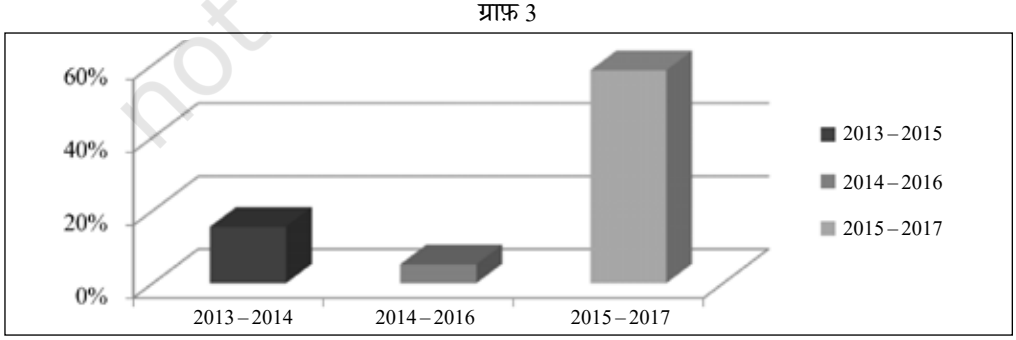

ग्राफ़ 4

© NCERT not to be republished

शैक्षिक निहितार्थ

परास्नातक विद्यार्थियों हेतु लघु शोध, शोध की प्रक्रिया को समझने के लिए परास्नातक पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण भाग है। जिसके अंतर्गत शिक्षार्थी शोध की समस्या, शोध के चरण, शोध ग्रंथ लेखन आदि से अवगत होते हैं। शिक्षार्थी शोध ग्रंथ लेखन में विभिन्न पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा शोध पत्रों का अवलोकन करते हैं और उनकी विषय-वस्तु को शोध ग्रंथ में समायोजित करते हैं। विभिन्न पुस्तकों, जर्नल तथा शोध पत्रों से ली गई विषय-वस्तु को इंगित करने के लिए ग्रंथ सूची में संदर्भित करते हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से यह पता चलता है कि विषय-वस्तु को इंगित करने के लिए ग्रंथ सूची में पुस्तकों, जर्नल तथा शोध पत्रों को संदर्भित करने में शिक्षार्थी किस प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं और विषय-वस्तु को इंगित करने के लिए ग्रंथ सूची में स्रोत की अनुपस्थिति को भी दर्शाते हैं। यह शोध पत्र न केवल शिक्षार्थियों, बल्कि मार्गदर्शक (गाइड) को भी विषय-वस्तु तथा ग्रंथ सूची लेखन में होने वाली विभिन्न त्रुटियों से अवगत कराता है।

निष्कर्ष

शोध की वैज्ञानिक कार्यविधि में संदर्भोल्लेख का महत्व अक्षुण्ण होता है। शोध का प्राणतत्त्व संदर्भ है। शोध की विश्वसनीयता, वैज्ञानिकता तथा सत्यता की रक्षा के लिए संदर्भ प्रस्तुत किया जाता है। संदर्भ के बिना शोध कार्य अधूरा माना जाता है, परंतु इसके बावजूद दुर्भाग्यवश संदर्भोल्लेखों के संबंध में लघु शोध की स्थिति आज तक विचारणीय ही कही जा सकती है। प्रस्तुत अध्ययन में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के महिला महाविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग में परास्तनातक स्तर पर शिक्षार्थियों द्वारा प्रस्तुत लघु शोधों की ग्रंथ सूची त्रुटियों से परिपूर्ण हैं, जिससे लघु शोधों की गुणवत्ता पर प्रश्न चिह्न परिलक्षित होता है। लघु शोध में प्राप्त विभिन्न अशुद्धियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शोधार्थी ग्रंथ सूची तैयार करते समय संदर्भ लेखन के प्रारूप की अज्ञानता के कारण त्रुटिपूर्ण ग्रंथ सूचीबद्ध कर देते हैं। यद्यपि संदर्भ लेखन में अशुद्धियाँ प्राप्त हुई हैं, साथ-ही-साथ मुख्य विषय-वस्तु में संदर्भित संदर्भों का ग्रंथ सूची में अनुपस्थिति भी पाई गई है, जो कि एक विचारणीय प्रश्न है।

संदर्भ

कर्लिंगर, एफ. एन. 1989. *फ़ाउंडेन ऑफ़ बिहैवियर रिसर्च.* होल्ट, रीनेहर्ट एंड विंस्टन पब्लिकेशन, न्यूयॉर्क.

गुप्ता, एस. पी. 2006. *मॉडर्न मेजरमेंट एंड इवैलुएशन.* शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स, इलाहाबाद.

गोरमैन, एफ. ए. 2016. *इम्पार्टेंस ऑफ़ यूज़िंग ए.पी.ए. फ़ार्मेट इन रिसर्च पेपर्स.* 16 मई, 2016 को http://classroom.syhonym.com. से प्राप्त किया गया है.

बेस्ट, जे. डब्ल्यू. और काह्न, जे. वी. 2005. *रिसर्च इन एजुकेशन,* दसवाँ संस्करण. प्रेंटिस-हॉल पब्लिकेशन, न्यू जर्सी.

वाट्स. 2001. *हिस्ट्री ऑफ़ साइकोलॉजी.* 21. पृ. 100 – 103. मैमोरी एण्ड कोग्निशन, स्प्रिंगर.

शंकर, राम. 2012. *वैयक्तिक अध्ययन— सामाजिक अध्ययन की एक विशिष्ट पद्धति के गुणवत्ता का अध्ययन.* अप्रकाशित लघु शोध, एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा.

© NCERT not to be republished

शटलवर्थ, मार्टिन. 2009. *राइटिंग ए बिब्लीयोग्राफ़ी*. 19 जुलाई, 2019 को https://explorable.com/writing-a-bibliography से प्राप्त किया गया है.

सिंह, अ. 2017. *सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में उपलब्ध शैक्षिक सुविधाएँ—रामनगर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में*. अप्रकाशित लघु शोध, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.

सिंह, ए. के. 2015. *शैक्षिक अनुसंधान में मनोविज्ञान, समाजशास्त्र एवं शिक्षाशास्त्र*. मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, वाराणसी.

सिहंल, बी. 2016. *शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि*. वाणी प्रकाशन, पटना.

© NCERT not to be republished